'राना लिधौरी' की दो ग़ज़लें

भार (वज़्न) – 122 122 122 122

ग़ज़ल – 'मिहिरबान् होगी''

सजी जिसके होठों पे मुस्कान होगी।
कली सबसे पहले वो बलिदान होगी।।

भँवर है सयाना तू सीधी कली है।
मुहब्बत करेगी तो हैरान होगी है।।

ये पत्थर ही भगवान का रूप लेगा।
इबादत में तेरी अगर जान होगी।।

ये कहता है परवाना उल्फ़त में यारों ।
अगर मर भी जाओ तो इक शान होगी।।

तवक्को जवां है मिरे दिल में 'राना'।
कभी तो नज़र वो मिहिरबान् होगी।।

***

भार (वज़्न) – 2 1222 1222 12

ग़ज़ल 51 ''घायल हो गये''

बचते बचते ही तो घायल हो गये।
नज़रे क़ातिल के यूँ कायल हो गये।।

रक़्स पर उसके हुआ ये हाल दोस्त।
यूँ लगा हम उसकी पायल हो गए।।

प्यार से देखा उन्होंने जब हमें।
आँख का हम उनकी काजल हो गए।।

दूर ही से देख उनको ऐ रफ़ीक।
जो गए नज़दीक पागल हो गए।।

छाई जब 'राना' मुहब्बत की घटा।
सब्ज़ सबके दिल के जंगल हो गए।।

***